

Poem

दुकान ए मच्छर

Dr. Sagar Borker

Assistant Professor PSM PGIMER and Dr RML hospital Medical College New Delhi 110001 India

Email: sagarborker@gmail.com

चहक रहा है सावन

सुनके मेरी सरगम

खून आज खूब पिछूँगी

जगह जगह है शबनम ..

पंखो पर है बाघ सा रंग

दिल्ली शहर मे पूरी है मेरी तरंग

छोटी सी उड़ान है जनाब

दर्द, ज्वर चकते का नहीं कोई हिसाब..

गंदे पानी में घर बनाऊ

काट काटकर पैर सुजाऊ

थमे रक्त की तेरी धरा

फिर न होवे दिन उजियारा..

ज्वर से कँपकँपाये तेरा बदन

भीषण बीमारी के यही है लक्षण

कायदे कानून में बनवउँ

गोलियोंसे नहीं अब होवे रक्षण ..

जापानी ज्वर, पित्त ज्वर, पश्चिम निल नदी बुखार,
चिकनगुनया, डेंगू, ज़हीका

ज्वारों के नाम है अनेक

टायर , पौधे, टंकी के पानी में अंडे डालू

कारण मात्र है सिर्फ एक ..

बदबू, गन्दगी, लाचारी, कीचड़, कचरा, शौच

सबका उठाऊ मैं पूरा फायदा

बच्चा, जवान, बुजुर्ग, नारी किसीको न बक्शु

करू मैं यह पक्का वायदा ..

सरहदे, फासले ,मैं न नापू

थोड़ा सा भी पानी जल्द से भापू

दुकान है मेरी सारे जहाँ मे ख्याति प्राप्त छाई

तेरी खुदगर्जी का जीता जगता उदाहरण हू भाई